ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)-८४८ १२५

बुलेटिन संख्या-२१
दिनांक-शुक्रवार,१५ मार्च,२०१९

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः ३२.० एवं १४.३ डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता ७३ सुबह में एवं दोपहर में ३८ प्रतिशत, हवा की औसत गति ३.३ कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण ४.७ मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन ८.२ घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा ५ से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में १८.४ एवं दोपहर में ३०.७ डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(१६ से २० मार्च,२०१९)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी १६ से २० मार्च,२०१९ तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः-

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों के आसमान में बादल देखे जा सकते है। १७ मार्च को एक-दो स्थानों पर हल्की बुंदा-बुंदी हो सकती है। हँलाकि आमतौर पर मौसम के शुष्क रहने की संभावना है।
- अधिकतम तापमान ३२ से ३४ डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है। न्यूनतम तापमान १७ से १९ डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- इस अवधि में औसतन ५-१० कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से मुख्यतः पछिया हवा चल सकती है। मधुबनी एवं सीतामढ़ी जिलों में १९-२० मार्च में पूरवा हवा रहने की संभावना है
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में ६० से ७० प्रतिशत तथा दोपहर में ४० से ४५ प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- उत्तर बिहार में मौसम के शुष्क रहने की संभावना को देखते हुए किसान भाई खड़ी फसलों में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। सरसों की कटनी, दौनी एवं सुखाने के कार्य को उच्च प्राथमिकता देकर समपन्न करें। आलू की अविलंब खुदाई कर भंडारित करे।
- रवी मक्का एवं गेहूँ की दाना बनने से दुध भरने की अवस्था वाली फसल में प्रयाप्त नमी का विशेष ध्यान रखें।
- गरमा मूंग तथा उरद की बुआई प्राथमिकता देकर करें। बुआई के पूर्व २० किलोग्राम नेत्रजन, ४५ किलोग्राम स्फूर, २० किलोग्राम पोटाश तथा २० किलोग्राम गंधक प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें। **मूंग** के लिए *पूसा विशाल, सम्राट, एस०एम०एल०-६६८, एच०यू०एम०-१६ एवं सोना* तथा **उरद** के लिए *पंत उरद-१९, पंत उरद-३१, नवीन एवं उत्तरा* किस्में बुआई के लिए अनुशंसित हैं। बुआई के दो दिन पूर्व बीज को कार्बेन्डाजीम २.५ ग्राम प्रति किलो ग्राम की दर से शोधित करें। बुआई के ठीक पहले शोधित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करें। बीजदर छोटे दानों के प्रभेदों हेतु २०-२५ किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर तथा बड़े दानों के प्रभेदों हेतु ३०-३५ किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर रखें। बुआई की दूरी 30x10 से०मी० रखें। बुआई पूर्व मिट्टी में नमी की जाँच कर लें।
- ओल की रोपाई करें। रोपाई के लिए *गजेन्द्र* किस्म अनुशंसित है। प्रत्येक ०.५ किलोग्राम के कन्द की रोपनी के लिए दूरी 75x75 से० मी० रखें। ०.५ किलोग्राम से कम वजन की कंद की रोपाई नहीं करे। वीज दर ८० क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से रखें। बुआई से पूर्व प्रति गड्ढ़ा ३ किलोग्राम सड़ी हुई गोबर, २० ग्राम अमोनियम सल्फेट या १० ग्राम युरिया, ३७.५ ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट एवं १६ ग्राम पोटेशियम सल्फेट का व्यवहार करे। ओल की कटे कन्द को ट्राइकोर्डमा भिरीडी दवा के ५.० ग्राम प्रति लीटर गोबर के घोल में मिलाकर २०-२५ मिनट तक डुबोकर रखने के बाद कन्द को निकालकर छाया में १०-१५ मिनट तक सुखने दें उसके बाद उपचारित कन्द को लगायें ताकि मिट्टी जनित बीमारी लगने की संभावना को रोका जा सके तथा अच्छी उपज प्राप्त हो सके।
- इन दिनों आम के बगीचों में मंजर पूरी तरह आ चुका है। किसान भाई आम में मंजर वाली अवस्था से फल के मटर के दाने के बराबर होने की अवस्था के मध्य किसी प्रकार का कोई भी कृषि रसायण का प्रयोग नही करे। विकृत दिखने वाले मंजर को तोरकर बाग से बाहर ले जाकर जला दें अथवा जमीन में गाड़ दें। इस अवस्था में बगीचे में सिंचाई नहीं करें। वरना फल झरने की संभावना बढ़ जाती है।
- लत्तर वाली सब्जियों जैसे नेनुआ, करैला, लौकी (कद्दू), और खीरा की छोटे-छोटे पौधों में लाल भृंग कीट की निगरानी करें। पौधों की प्रारंभिक अवस्था जो की फरवरी-मार्च माह के दौरान आता है, इस अवधि में कीट से फसलों को काफी नुकसान होता है। इस कीट के पीठ का रंग नारंगी लाल तथा अधर भाग का रंग काला होता है। इसके शिशु फसल की जड़ को काट देते है। व्यस्क कीट बड़े पौधों की पत्तियों एवं फुलों को हानी पहुचाते है। पत्तियाँ खा लेने की वजह से पौधे की बढ़वार रुक जाती है तथा कभी-कभी पौधे सुख जाते है। गाय के गोबर की राख में थोड़ा किरासन मिलाकर पौधों पर सुबह में भुरकाव करने से इस कीट का आक्रमण कम हो जाता है। अधिक नुकसान होने पर क्लोरोपायरीफास २ प्रतिशत धूल दवा का २० किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से पौधों की जड़ों के पास मिट्टी में मिला देने से इस कीट शिशु नष्ट हो जातें है। पत्तियों पर डाइक्लोरवॉस ७६ ई०सी० का १ मि०ली० प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।
- इस मौसम में सब्जियों एवं अन्य फसलों में लाही कीट का प्रकोप अधिक रहता है। यह कीट पौधें के विभिन्न भगों से रस को चुसते है जिससे पौधे सुख जाते है। फलों के दाने सिकुड़कर छोटे रह जाते है। कीटों की संख्या अधिक हो जाने पर रोकथाम के लिए इम्डिाक्लोप्रिड दवा का १.० मी.ली. प्रति ४ लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करें।
- शुष्क मौसम एवं तापमान में वृद्धि होना थ्रिप्स कीट के लिए अनुकुल वातावरण है। ऐसी अवस्था (मार्च माह) में थ्रिप्स कीट की संख्या अपने चरम पर पहुँच जाती है। इनकी समय पर रोक-थाम नहीं होने से फसल में रोग-व्याधि आ जाती है एवं उपज में काफी कमी आती हैं। इसे देखते हुए प्याज उत्पादक कृषक बन्धु फसल में थ्रिप्स कीट की रोक-थाम समय से करें। यह आकार में अतिसुक्ष्म होते हैं तथा पत्तियों की सतह पर चिपक कर रस चुसते है जिससे पत्तियों का ऊपरी हिस्सा टेढ़ा-मेढा हो जाता है। पत्तियों पर दाग सा दिखाई देता है जो बाद में हल्के सफेद हो जाते है। कीट का प्रकोप फसल में दिखने पर प्रोफेनोफॉस ५० ई०सी० दवा का १.० मि०ली० प्रति लीटर पानी या इम्डिाक्लोप्रिड दवा का १.० मी.ली. प्रति ४ लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव १०-१५ दिनों के अन्तराल पर दो बार दवा बदल-बदल कर करें।

आज का अधिकतम तापमानः ३२.८ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से १.३ डिग्री अधिक	आज का न्यूनतम तापमानः १७.० डिग्री सेल्सियस, सामान्य से १.७ डिग्री अधिक

(डॉ० ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी